Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –6, July - 2011
ISSN:- 2230-7850

ORIGINAL ARTICLE

अलाउद्वीन खिलजी की शासनकाल में मुद्रा एवं माप तौल पद्वति का विकास

बबलू ठाकुर
शोधार्थी, ल0 ना0 मि0 वि0, दरभंगा.

अलाउद्वीन खिलजी का शासन काल अन्य व्यवसायों की तरह ही इस क्षेत्र में भी सल्तनकालीन मुद्रा एवं माप–तौल का स्थापना काल कहा जाता सकता है किन्तु विनियम के संबंध में मुद्र एवं तौल को प्रचलित करने तथा स्वर्ण सिक्कों के भार में परिवर्तन करने का प्रलय किया गया था। वस्तुतः सल्तनतकाल में सिक्कों की प्रमुख विशेषता उनके मूल्य का आधार प्रतीक में न हो कर वस्तु में निहित होना था इस प्रवृति का स्पष्ट उदाहरण हमें दक्षिण में प्रचलित इस व्यवस्था में देखने को मिलता है कि वहाँ पर कुछ परिस्थितियों में सुनारी एवं सोना–चाँदी के व्यापारियों को उचित भार एवं वास्तविक मूल्य की मुद्रा आवश्यक नियमों के पालन करने पर डालने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। सिक्के की शुद्वता एवं भारत की प्रमाणिकता बनाये रखने के लिए राज्य द्वारा पूर्ण प्रयत्न किये जाते थे। वस्तुतः अलाउद्वीन के शासनकाल में चाँदी के सिक्के के भार में 175 ग्रेन से 140 ग्रेन की कमी कर दी गई थी। परिर्वतन का अन्य उदाहरण जो वास्तव में मुद्रा व्यवस्था में नवीन अन्वेषण था। मुहम्मद तुगलक द्वारा प्रतीक मुद्रा के चलन में मिलता है: यद्यपि इस कार्य में वह असफल रहा।

मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था में मौद्रिकरण का स्वरूप तथा वाणिज्य व व्यापार का विकास था। मैद्रिक अर्थव्यवस्था के लिए मुद्रा व्यवस्था तथा मुद्रा के संबंध में वस्तुओं के भार का निर्धारण अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक संस्थाओं की आधार शिला थी।

इस दृष्टि से अलाउद्वीन खिलजी के काल में मुद्रा एवं माप–तौल पद्धति का विकास तथा वाणिज्य एवं व्यापार की स्थिति का अध्ययन विषय को पूर्ण रूपेण समझने के लिए आवश्यक है।

अल्लाउद्वीन काल की मुद्रा की मूल विशेषता सिक्के में धातु की थी। सामान्यतः बाजार में प्रचलित सिक्को में पीतल व तनका सर्वाधिक प्रयोग में आते थे। शिहाबुद्वीन अलउमरी ने, जिसने दौदहवी शताब्दी के पूर्वाद्धा में हिन्दुस्तान के बाहर रहकर यहाँ के विषय में महत्वपूर्ण विवरण लिखा– अपने ग्रंथ मसालि कुल अवसार में लिखा है कि '' हिन्दुस्तान में लाल तनका तीन मिरकाल के बराबर होता हैं तथा सफेद तनका अर्यात चाँदी के तनके में 8 हस्तमानी दिरहम होते है''। यह हस्तमानी दिरहम चाँदी के दिरहम के वजन के बराबर है जो मिन तथा शाम में प्रचलित है। इन हस्तमानी दिरहम में चार–सुल्तानी दिरहम होते है इन्हे दोगानी कहते है। ये सुल्तानी दिरहम शष्तगानी हिरहम के एक–तिहाई समानान्तर होते है और यही एक प्रकार का सिक्का है जो हिन्दुस्तान में चलता है। इस सुल्तानी दिरहम का आधा बगानी कहलाता है और एक पीतल होता है। एक दूसरा दिरहम इजदेहगानी कहलाता हैं जिसका मूल्य हस्तगानी के ड्योदे जितना होता है। एक अन्य दिरहम शांजहानी कहलाता है जिसका मूल्य दो दिरहम के बराबर होता है। इस समय हिन्दुस्तान में छह प्रकार के दिरहम होते है– शोज देहगानी, इजदेहगानी,हस्तगानी, शश्तगानी, सुल्तानी तथा यगानी। इनमें सबसे छोटा सुल्तानी दिरहम होता हैं। ये तीनों दिरहम प्रचलित है और इनमें व्यापारिक लेन–देन इन्हीं से होता है, परन्तु अधिकांश कारोबार सुल्तानी दिरहम में होता है जो मिश्र तथा शाम के दिरहम के चौथाई के बराबर होता है। इस सुल्तानी दिरहम में आठ फुलूरा अथवा दो जीतल होते हैं।

प्रत्येक जीतल 4 फुलूसके बराबर होता है। इस प्रकार हसतगानी दिरहम में जो मिश्र तथा शाम में प्रचलित चाँदी के दिरहम के बराबर होता है, 32 फुलूस है''।

अलाउद्वीन की बाजार व्यवस्था के अन्तर्गत कीमतों की सूची में जीतल का विभाजन एक तिहाई एक वर्जित किया गया है तथा चाँदी के सिक्के का प्रचलन सामान्य व्यवस्था के अंतर्गत देखा जा सकता है। फरिश्ता के अनुसार अलाउद्वीन खिलजी के शासन काल में तनका एक तौले सोने अथवा चाँदी का होता था। चाँदी का प्रत्येक तनका 50 तांबे के पोल (पैसे) के बराबर होता था, जो जीतल कहलाता था, किन्तु इनके वजन के विषय में कोई जानकारी नहीं हैं। कुछ का यह मत है कि इस समय के तौल के समान इसका वनज पौने दो तोला होता था तथा एक तोला में 50 जीतल (पोल) होने के विषय में नेल्सन राईट का मत है कि एक तनका में 48 जीतल में होने का अनुमान 50 जीतल की अपेक्षा अधिक सम्भावित है– एक चाँदी के तनके में 48 जीतल होने का अनुमान उक्त वर्णित तुगलक कालीन सामयिक विवरण से भी स्पष्ट होता है।

सल्तनत कालीन सुल्तानाों ने चाँदी के सिक्कों का ताँबे के सिक्कों में विभाजन की वयवस्था जो कि हिन्दु शासको के अन्तर्गत विद्यमान थी, चालू रखी– हिन्दु समसंख्या गणना के लिए चौथाई के पैमानों को अपनाते थे। दिल्ली सुल्तानों ने चाँदी के एक तनके का 64 जीतल या कानी(ताँबा) में विभाजन की व्यवस्था जाारी रखी जो मुसालिकुल अवसार के उक्त विवरण से स्पष्ट होती है।

थामस के मूल्यांकन के अनुसार–

फरिश्ता के विवरण के आधार पर एक मन ब्रिटिशकालीन 14 शेर के बराबर था।

फरिश्ता के अनुसार अलाउद्वीन खिलजी के समय में एक मन चालीस सेर के बराबर होता था। प्रत्येक सेर 24 तोले का होता था। ममालिकुल अमसार के विवरण से स्पष्ट है कि मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में तौल का मापदंड मन एवं सेर में होता था। इन लोगों का रतल सेर कहलाता है जिसका वजन 70 मिस्काल होता है जो 102 2**/3 मिश्री दिरहम के** बराबर होता है। प्रत्येक मन 40 सेर होता है। इस तरह एक मन 40 सेर का होता था, एक सेर 70 मिस्काल के बराबर एक भार औसतन 72 ग्रेन मानने पर एक सेर 5040 ग्रेन तथा एक मन 201600 ग्रेन अर्थात् 28.8 पौंड भार का होता था। फरिश्ता द्वारा मन मे भार के अनुसार एक मन चालीस सेर का तथा एक सेर 24 तौले का निश्चित होता है।

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में प्रचलित सोने एवं चाँदी के सिक्कों के विभिन्न प्रकार तथा व्यापार में इनको प्रयोग पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला जा सकता है। साथ ही मिश्र तथा शाम में प्रचलित सिक्कों के व्यापारिक संबंधों के साथ मूल्यांकन तत्कालीन भारत का मिश्र तथा शाम के व्यापारिक संबंधों तथा मुद्रा के मूल्य के निर्धारण को प्रकट करता है। वस्तुतः चौदहवीं शताब्दी में प्रचलित मुद्राओं के विषय में ज्ञान के लिए शम्सेसिराज अफीक द्वारा फीरोज तुगलक के विषय में दिया गया विवरण अपने आप में महत्वपूर्ण है। अफीक के अनुसार सुल्तान फिरोजशाह ने विभिन्न प्रकार के सिक्के चलायें। सोने का तनमा, चाँदी का तनका, सिक्काये चिहल व हस्तगामी –(48 जीतल मूल्य की मुद्रा) **, मोहर विरात व पंजगानी (24** जीतल मूल्य की मुद्रा) , इजदेहगानी (12 जीतल मूल्य की मुद्रा), दहगानी (10 जीतल मूल्य की मुद्रा), हस्तगानी (8 जीतल मूल्य की मुद्रा), शशगानी 6 जीतल मूल्य की मुद्रा), तथा मोहरे यह जीतल (1 जीतल मूल्य की मुद्रा)) '' अफीक के विवरण से ज्ञात है कि फिरोज तुगलक के शासनकाल में सोने व चाँदी की मुद्रा का छोटी इकाई जीतल समान्तर –अनुपात ही निश्चित नहीं किया गया अपितु जीतल की इकाई आधी एवं चौथाई भी प्रचलित की गई जिससे लेन–देन में पूर्ण सुविधा हो सके।

बहलाले लोदी ने बहलोली नामक सिक्का चलाया जो शेरशाह व अकबर– कालीन दाम की तरह तनका का 10 वॉ भाग होता था। सुल्तान सिकन्दर लोदी के शाशनकाल में तांबे का सिक्का प्रति पादित किया गया था जो एक चाँदी के सिक्के का 20 वॉ भाग था। यह सिकन्दरी तनका अर्थात् दुगुना दाम अकबरकालीन दाम का अग्रगामी था। इस तरह तनका के स्थापित मूल्यांकन के अनुपात में सिकन्दरी तनका 64 ⁄ 40 अथवा 1.6 जीतल था।

उपरोक्त शोध पत्र में हम यह निष्कर्ष पर पहुंचते है कि अलाउद्दीन खिलजी की शाशनकाल में मुद्रा एवं माप–तौल प्रणालियों तथा मापदण्डों का प्रयोग शुरू हो गया था। इनके द्वारा प्रस्तावित बाजार व्यवस्था तथा बादर के सुल्तानों के शाशन काल में प्रचलित वस्तुओं के भाव एवं तौल का उल्लेख उस काल में प्रचलित मुद्रा व माप तौल के स्वरूप पर प्रकाश डालता है।

सन्दर्य सूचीः–

1. दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी निर्देशालय, नई दिल्ली, 1998
2. ममालिकुल अमसार, मुगलकालीन भारत, भाग–1, पृ0–331
3. नेल्सन राईट, पृ0–72
4. के0 एम0 अशरफ , लाईफ एंड कंडिशन ऑफ द पिपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ–288
5. के0 एस0 लाल, हिस्ट्री ऑफ खलजीज, पृ0–199
6. ई0 थामस, क्रॉनिकल्स, पृ0–160–63
7. अफीक, तुगलकालीन भारत, भाग–2, पृ0–344